



या देवी सर्वभूतेषु — देवी के 21 रूप

श्री देवी नमन स्तोत्र से

Eternal Raga

eternalraga.com

प्रथम संस्करण

प्रस्तावना

श्री देवी नमन स्तोत्र से

श्री देवी नमन स्तोत्र देवी माहात्म्य परंपरा के सबसे गहन स्तोत्रों में से एक है। अधिकांश भक्त केवल वह श्लोक जानते हैं जो देवी को शक्तिरूप में नमन करता है। लेकिन इस पूरण स्तोत्र में 21 ऐसे श्लोक हैं। प्रत्येक श्लोक उस भिन्न रूप को नमन करता है जिसमें देवी हर जीव के भीतर वरिजमान हैं। वे केवल मंदिरों में या औपचारिक पूजा के क्षणों तक सीमिति नहीं हैं। वे नदिरा में हैं, कषुधा में हैं, स्मृति में हैं, दया में हैं, भ्रांति में हैं और अनुग्रह में भी हैं। यह ग्रंथ सभी 21 रूपों को उनके संस्कृत स्रोत, अर्थ और दार्शनिक महत्व के साथ प्रस्तुत करता है — जीवन के हर आयाम में देवी को पहचानने का एक नमिंतरण।

रूप 1 — वषिणुमाया



या देवी सर्वभूतेषु वषिणुमायेत शिबदति।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में वषिणुमाया के नाम से जानी जाती हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

माया का अर्थ केवल भ्रम नहीं है। माया वह द्रव्य शक्ति है जिसके द्वारा नरिकार साकार होता है और अदृश्य दृश्य बनता है। वषिणुमाया वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था-तत्त्व है जिसके माध्यम से वषिणु, पालनकर्ता, इस ब्रह्मांड को उसके जटिल संतुलन में धारण करते हैं। जब आप इस संसार को वास्तविक, जीवंत और उपस्थिति अनुभव करते हैं, तो यह वषिणुमाया का कार्य है। देवी इस अनुभव से अलग नहीं हैं। वे इसके आधार-वस्त्र हैं।

तत्त्व

ब्रह्मांडीय व्यवस्था-तत्त्व

गुण

नरिकार को दृश्य बनाने की शक्ति

रूप 2 — चेतना



या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में चेतना के रूप में जानी जाती हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

चेतना स्वयं जागरूकता है — जानने, अनुभव करने, उपस्थिति रहने की क्षमता। एक सजीव प्राणी को जड़ वस्तु से अलग करने वाली यही चेतना-शक्ति है। देवी घोषणा करती है कि यह चेतना, जो सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े प्राणी में वदियमान है, उनकी अपनी उपस्थिति है। जब आप इस पंक्ति को पढ़ने के प्रति सजग हैं, वह जागरूकता ही चेतना के रूप में देवी है।

तत्व

चेतना / जागरूकता

गुण

सभी जीवों में ज्ञान की उपस्थिति

रूप 3 — बुद्धि



या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में बुद्धिरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

बुद्धि केवल बुद्धिमित्ता या शक्ति नहीं है। यह वविक की शक्ति है — सत्य को असत्य से और धर्म को अधर्म से पहचानने की आंतरिक क्षमता। जब भारी दबाव में भी आप सही मार्ग चुनते हैं, तो वह बुद्धिरूपा देवी ही उस चुनाव में मार्गदर्शन करती हैं। यह रूप हमें स्मरण कराता है कि ज्ञान केवल अध्ययन से नहीं आता — यह देवी का अनुग्रह है।

तत्व

बुद्धि/ वविक

गुण

सत्य और मथिया को पहचानने की शक्ति

रूप 4 — नदिरा



या देवी सर्वभूतेषु नदिरारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में नदिरारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

नदिरा साधारण या नषिक्रयि प्रतीत होती है। फरि भी यह जीवन के सबसे आवश्यक कार्यों में से एक है। नदिरा के बिना कोई प्राणी जीवति नहीं रह सकता। देवी माहात्म्य में योगनदिरा को वह ब्रह्मांडीय नदिरा कहा गया है जो सृष्टिके चक्रों के बीच स्वयं भगवान वषिणु को भी आच्छादति करती है। नदिरारूपा देवी महान पुनरस्थापना करने वाली हैं — वे चेतना को भीतर खींचती हैं ताकि शरीर स्वस्थ हो, मन शांत हो और प्राणी नवीन होकर लौटे। जब आप गहरी, वशि्रांतदायक नींद में जाते हैं, तो देवी ही आपको ग्रहण करती हैं।

तत्व

नदिरा / पुनरस्थापना

गुण

सब प्राणियों को नवीन करने की शक्ति

रूप 5 — क्षुधा



या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में क्षुधारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

क्षुधा शरीर की यह घोषणा है कविह जीवन का चुनाव करता है। यह सबसे आदमि संकेतों में से एक है — जीवति प्राणी की स्वयं को बनाए रखने की आग्रह। क्षुधा को अपने रूपों में रखकर देवी एक गहरी बात कहती हैं: वे केवल सुंदर और पवतिर में नहीं रहती। वे आवश्यकता में, लालसा में, सबसे बुनयिदी मानवीय अनुभव में उपस्थिति हैं। इस दृष्टिसे कसिी को भोजन कराना देवी की ही सेवा है।

तत्व

क्षुधा / मूल आवश्यकता

गुण

जीवनशक्ति जो स्वयं को बनाए रखने पर आग्रह करती है

रूप 6 — छाया



या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में छायारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचिचन

छाया इस संदर्भ में दो अर्थ रखती है। पहला है आश्रय — एक छाया जो तपती धूप से बचाती है, वह शीतल स्थान जहाँ थका हुआ प्राणी विश्राम पाता है। दूसरा अर्थ, जो कुछ पारंपरिक टीकाओं में मलिता है, उच्चतर आत्मा का प्रतबिम्ब है — किसी प्राणी का बाहरी रूप उसके भीतर के गहरे सत्य की धुंधली प्रतधिवनिके रूप में। छायारूपा देवी वह संरक्षण भी हैं जो वे प्रदान करती हैं और वह सूक्ष्म स्मरण भी कहिम स्वयं में जो देखते हैं वह केवल एक प्रतबिम्ब हो सकता है।

तत्व

छाया / आश्रय / प्रतबिम्ब

गुण

संरक्षण और गहरे सत्य की प्रतधिवनि

रूप 7 — शक्ति



या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में शक्तिरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

यह वह रूप है जिसमें अधिकांश भक्त पहचानते हैं, वह श्लोक जो सबसे अधिक जपा जाता है। शक्तिविह आदमि ऊर्जा है जो सभी कार्यों का आधार है — चलने, सृजन करने, प्रतिरोध करने, रक्षा करने और सहन करने की क्षमता। यह केवल शारीरिक बल नहीं है। शक्तिमें इच्छाशक्ति की दृढ़ता, विश्वास का बल और वह ऊर्जा भी शामिल है जो पराजय के बाद व्यक्तिको उठने में सक्षम बनाती है। जब आप वह करने की शक्ति पाते हैं जो कया जाना आवश्यक है, तो शक्तिरूपा देवी उस क्षण में उपस्थित हैं।

तत्व

शक्ति/ ऊर्जा

गुण

वह आदमि शक्ति जो सभी कार्यों को संभव बनाती है

रूप 8 — तृष्णा



या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में तृष्णारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

तृष्णा तीव्र लालसा, प्यास, गहरी इच्छा है। जो परंपराएं आसक्तिकी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं वे अक्सर तृष्णा को दूर करने योग्य मानती हैं। फरि भी यह स्तोत्र इसे दविय रूप के रूप में नमन करता है। तृष्णारूपा देवी वह शक्ति हैं जो हर जीव को आगे प्रेरित करती हैं — जानने की प्यास, सृजन करने की, जुड़ने की, बढ़ने की। इस शक्तिके बिना कुछ भी नहीं चलता। यह लालसा स्वयं, जसिमें दविय के लिए आध्यात्मिक लालसा भी शामिल है, हृदय में कार्यरत देवी हैं।

तत्व

तृष्णा / लालसा / इच्छा

गुण

वह शक्ति जो सब प्राणियों को आगे प्रेरित करती है

रूप 9 — क्षान्ति



या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में क्षान्तिरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

क्षान्ति में सहिष्णुता, धैर्य और क्षमा सम्मिलित हैं। यह उन दुर्लभतम और सबसे मांगलिक गुणों में से एक है जो कोई मनुष्य विकसित कर सकता है। जब कोई आपके साथ गलत करे और आप बिना टूटे अपनी मर्यादा बनाए रखें, जब परस्थितियाँ विपरीत हों और आप स्थिर रहें — यह क्षमता कमजोरी से नहीं आती। यह इतनी परिष्कृत शक्ति है कि इसे बनाए रखने के लिए देवी की कृपा की आवश्यकता है। क्षान्तिरूपा देवी संसार को बखिरने से बचाती हैं।

तत्व

क्षान्ति / धैर्य / क्षमा

गुण

वह शक्ति जो दबाव में भी स्थिर रहती है

रूप 10 — जाति



या देवी सर्वभूतेषु जातरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में जातरूप से — सब कुछ के मूल कारण के रूप में — वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

इस संदर्भ में जातिसामाजिक वर्गों को नहीं दर्शाती। यह किसी प्राणी की मूलभूत प्रकृति या जन्मजात स्वभाव को संदर्भित करती है — वह मौलिक चरित्र जिसके साथ वह अस्तित्व में आता है। हर प्राणी की एक अनविर्य प्रकृति होती है: वृक्ष की प्रकृति, अग्नि की प्रकृति, मनुष्य की प्रकृति। जातरूपा देवी प्रत्येक प्राणी की प्रकृति के उद्गम पर उपस्थिति हैं, वह स्रोत जहाँ से उसके अस्तित्व का विशेष ढंग उत्पन्न होता है। वे वभिदति अस्तित्व का सदिधांत स्वयं हैं।

तत्व

जाति / मूलभूत प्रकृति

गुण

हर प्राणी के मूलभूत स्वभाव का स्रोत

रूप 11 — लज्जा



या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में लज्जारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचिचन

लज्जा का अनुवाद अक्सर शर्म के रूप में किया जाता है, लेकिन इसका पूर्ण अर्थ वनिम्रता और मर्यादा-बोध है — उचित व्यवहार और नैतिक संयम की आंतरिक भावना। यह वह शांत आवाज़ है जो किसी कार्य से पहले कहती है कि यह उचित नहीं है। यह एक सचेत नैतिक प्राणी को बनिा वचिार के कार्य करने वाले से अलग करती है। यह आंतरिक संयम कमजोरी या कायरता नहीं है। यह देवी हैं जो मानव समाज के नैतिक ताने-बाने को एक साथ बनाए रखती हैं। जहाँ लज्जा है वहाँ वचिक है। जहाँ यह अनुपस्थिति है वहाँ हानि होती है।

तत्व

लज्जा / नैतिक संयम

गुण

वह वचिक जो नैतिक जीवन को एक साथ बनाए रखता है

रूप 12 — शान्ति



या देवी सर्वभूतेषु शान्तरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में शान्तरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

शान्तिशोर या संघर्ष का अभाव नहीं है। यह एक गहरी आंतरिक स्थिति है जो परस्थितियों अशांत होने पर भी अवचलित रहती है। यह तूफान के केंद्र में स्थिति आँख है। जब कोई व्यक्ति/मिहान कठनाई के बीच भी केंद्रित, शांत और स्पष्ट रहता है — वह क्षमता शान्तरूपा देवी हैं। वे वह अस्तित्व-आधार हैं जसि पर सब कुछ टिका है। इस मूल स्थिति के बिना कोई अन्य गुण बना नहीं रह सकता।

तत्व

शान्ति / आंतरिक स्थिति

गुण

वह स्थिति जो किसी भी तूफान में अडगि रहती है

रूप 13 — श्रद्धा



या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में श्रद्धारूप से वरिजमान है — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

श्रद्धा धार्मिक विश्वास से कहीं अधिक है। यह पूर्ण-हृदय से संलग्न होने का गुण है — वह ईमानदारी जिसके साथ कोई व्यक्ति जो करता है उसमें स्वयं को समर्पित करता है। एक शिल्पकार जो पूर्ण ध्यान से काम करता है, उसमें श्रद्धा है। एक अभिभावक जो प्रेम से बच्चे के लिए खाना बनाता है, उसमें श्रद्धा है। एक भक्त जो बिना वचिलन के प्रार्थना करता है, उसमें श्रद्धा है। भगवद्गीता श्रद्धा को आधारभूत मानती है और कहती है कि मनुष्य अपनी श्रद्धा से निर्मित होता है। श्रद्धारूपा देवी वह पवित्र गुण हैं जो साधारण कर्म को भक्ति में बदल देती हैं।

तत्त्व

श्रद्धा / पूर्ण-हृदय समर्पण

गुण

वह ईमानदारी जो कर्म को भक्ति में बदल देती है

रूप 14 — कान्ति



या देवी सर्वभूतेषु कान्तरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में कान्तरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचिचन

कान्तिविह दीप्तमिान गुण है — वह आंतरिकि आभा जो किसी प्राणी के मुख और रूप पर दृश्यमान हो जाती है। यह केवल शारीरिक सुंदरता से भिन्न है। गहरे ध्यान में बैठा व्यक्ति, नवजात को थामे माँ, अपने काम में लीन कलाकार — इनमें से प्रत्येक एक दृश्यमान आभा धारण कर सकता है जो सौंदर्य प्रसाधनों से नहीं बल्कि शांति, प्रेम या भक्तिकी आंतरिक अवस्था से आती है। वह दीप्तिकान्तरूपा देवी हैं। वे सुंदरता हैं जैसी वह वास्तव में है: एक ज्योतिजो भीतर से प्रकाशति होती है।

तत्व

कान्ति / आंतरिकि सौंदर्य

गुण

वह ज्योतिजो अनुग्रह की आंतरिकि अवस्था से प्रकाशति होती है

रूप 15 — लक्ष्मी



या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में लक्ष्मीरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

यहाँ लक्ष्मी केवल भौतिक अर्थों में धन की देवी नहीं हैं। वे अपने पूर्ण अर्थ में प्रचुरता का प्रतिनिधित्व करती हैं — जीवन का अपने सभी आयामों में फलना-फूलना। स्वास्थ्य लक्ष्मी है। प्रेमपूर्ण परिवार लक्ष्मी है। सच्ची मतिरता लक्ष्मी है। शांत मन की संतुष्टि लक्ष्मी है। लक्ष्मी शब्द एक ऐसी धातु से आता है जिसका अर्थ है देखना, अवलोकन करना — यह सुझाव देता है कि समृद्धि आंशिक रूप से यह पहचानने और सराहने की क्षमता है कि व्यक्तियों के पास पहले से क्या है। लक्ष्मीरूपा देवी वह परिपूर्णता हैं जो जीवन धारण कर सकता है।

तत्त्व

लक्ष्मी / प्रचुरता

गुण

जीवन की परिपूर्णता और सभी आयामों में फलना-फूलना

रूप 16 — वृत्ति



या देवी सर्वभूतेषु वृत्तरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में वृत्तरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

वृत्ति वह नरितर गतविधि है, स्वाभाविक प्रवृत्ति है, किसी प्राणी का व्यवसाय या कार्य है। नदी बहती है — यह उसकी वृत्ति है। पक्षी गाता है — यह उसकी वृत्ति है। शिक्षक पढ़ाता है, चकित्सक ठीक करता है, नरिमाता बनाता है — प्रत्येक संसार में अपनी अनविर्य गतविधि व्यक्त करता है। वृत्तिरूपा देवी जीवन के इस अनवरत संचलन के पीछे की प्राण-शक्ति हैं। सृजन एक स्थिर घटना नहीं बल्कि एक नरितर गतविधि है, और देवी वह शक्ति हैं जो इसे गतमिन रखती हैं।

तत्व

वृत्ति / स्वाभाविक कार्य

गुण

वह शक्ति जो सृजन को नरितर गतमिन रखती है

रूप 17 — स्मृति



या देवी सर्वभूतेषु स्मृतरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में स्मृतरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचिचन

स्मृतिथियों को याद करने की क्षमता से अधिक है। यह वह धागा है जो किसी प्राणी को उसके अतीत से, उसके संबंधों से, उसकी पहचान से जोड़ता है। स्मृतिके बिना कोई नरितर अर्थ में आत्मा नहीं है, कोई संचति ज्ञान नहीं, अनुभव से कोई सीख नहीं। स्मृतिरूपा देवी इस धागे को बनाए रखती हैं। व्यापक हिन्दू दार्शनिक परंपरा में स्मृतिस्मरण की गई और प्रसारति ज्ञान की संस्था को भी संदर्भति करती है — शास्त्र, परंपरा, वंश-परंपरा। देवी व्यक्तगित और सामूहिकि दोनों स्मृतिथियाँ धारण करती हैं।

तत्व

स्मृति/नरितरता

गुण

वह धागा जो प्राणी को उसके अतीत और पहचान से जोड़ता है

रूप 18 — दया



या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में दयारूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचिचन

दया करुणा है — दूसरे प्राणी की पीड़ा को अनुभव करने और देखभाल के साथ प्रतिक्रिया देने की क्षमता। यह हनिदू, दार्शनिक और भक्तिपरंपराओं में सबसे नरितर सराहति गुणों में से एक है। जब आप दर्द देखते हैं और आपके भीतर कुछ प्रतिक्रिया करता है, जब आप प्रतफल की अपेक्षा के बनिा दूसरे का बोझ हलका करने के लिए कार्य करते हैं, तो दयारूपा देवी आपके माध्यम से संचालति हो रही हैं। करुणा वह बदिु है जहाँ व्यक्तगित आत्मा अपनी सीमा से परे जाकर अस्ततिव की साझा भूमिको स्पर्श करती है।

तत्व

दया / करुणा

गुण

वह प्रतिक्रिया जो आत्मा से परे दूसरे तक पहुँचती है

रूप 19 — तुष्टि



या देवी सर्वभूतेषु तुष्टरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में तुष्टरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

तुष्टसंतोष है — यह दुर्लभ और बहुमूल्य अनुभव कयिह क्षण, यह जीवन, यह श्वास पर्याप्त है। यह वशिराम या नषिक्रयिता नहीं है। यह वह परपूरणता है जो तब उत्पन्न होती है जब मन की बेचैन खोज क्षण भर के लिए शांत होती है। एक ऐसे संसार में जो नरितर अधिकि पर जोर देता है, तुष्ट एक क्रांतिकारी और कठनि उपलब्धि है। तुष्टरूपा देवी वह अनुग्रह है जो किसी प्राणी को, यहाँ तक कि संक्षेप में भी, पर्याप्तता में वशिराम करने देती है। जब आप वह दुर्लभ परपूरणता की भावना अनुभव करते हैं, तो देवी उस स्थिति में उपस्थिति हैं।

तत्व

तुष्टि/ संतोष

गुण

जो है उसमें वशिराम करने का अनुग्रह

रूप 20 — मातृ



या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में मातृरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वचन

मातृ रूप देवी की उपस्थिति में सबसे तत्काल और पहचानी जाने वाली में से एक है। यह वह प्रेम है जो बिना लागत गनि देता है, वह संरक्षण जैसे किसी कारण की आवश्यकता नहीं, वह देखभाल जो प्रतफल की परवाह किए बिना जारी रहती है। फरि भी यह स्तोत्र मातृ रूप को केवल जन्म देने वालों तक सीमति नहीं करता। जहाँ भी किसी दूसरे प्राणी की रक्षा, पोषण, पालन-पोषण की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है — एक माता-पिता में, एक शिक्षक में, एक मतिर में, एक अजनबी में जो दयालुता से कार्य करे — वहाँ देवी मातृरूप से उपस्थिति हैं।

तत्त्व

मातृ / नशिरत देखभाल

गुण

वह प्रेम जो बिना लागत गनि देता है

रूप 21 — भ्रान्ति



या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ

उस देवी को नमन जो सब प्राणियों में भ्रान्तरूप से वरिजमान हैं — नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः

वकिचन

यह स्तोत्र का सबसे चौकाने वाला रूप है। भ्रान्तरूपा देवी — भ्रम, उलझन, त्रुटि। यह श्लोक भ्रम की महिमा नहीं करता या यह नहीं सुझाता कि त्रुटि अच्छी है। यह जो कहता है वह अधिक गहरा है: आपके सबसे बड़े भ्रम के क्षणों में भी, जब आप पूरी तरह रास्ता खो चुके हों, देवी ने आपको नहीं छोड़ा है। वे भ्रान्ति में भी उपस्थित हैं। यह स्तोत्र का सबसे गहरा कथन है — कि कोई भी मानवीय अवस्था नहीं है, चाहे कतिनी भी त्रुटिपूर्ण या खोई हुई हो, जिससे देवी पीछे हट जाएं। उनकी उपस्थिति सिच में बना किसी शर्त के है।

तत्व

भ्रान्ति / भ्रम / उलझन

गुण

वह अनुग्रह जो हमारे सबसे खोए हुए क्षणों में भी बना रहता है



नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

आपका हर अनुभव देवी का एक रूप है।

Eternal Raga

eternalraga.com